पाठ -९ बुनाई कला

जाड़े की गुनगुनी धूप दूर तक फैली हुई थी। हाथ में ऊन का गोला और सलाइयाँ लिए मीना सोच रही थी कि इस ऊन से मैं क्या बनाऊँ? तभी उसकी सहेली विभा आती है। दोनों बहुत देर तक मौसम और बुनाई के बारे में बातें करती हैं। मीना अपनी सहेली से डिजाइन के बारे में जानना चाहती है। विभा ने उसे बुनाई एवं डिजाइन से संबंधित निम्नवत् बातें बतायीं:- सिलाई, कढ़ाई की तरह ही बुनाई भी एक सुंदर एवं आकर्षक कला है। इसका अपना एक विशेष स्थान है। आकर्षक नमूने के बुने हुए वस्त्र नारी-कला का प्रत्यक्ष प्रमाण होते हैं। इन सभी कारणों से बालिकाओं को इस कला में दक्ष होना चाहिए।

बुनाई (Knitting)

ऊन के फंदे बनाकर सलाइयों की सहायता से वस्त्रों का निर्माण करना ही बुनाई कला है। सलाइयों से ऊन द्वारा वस्त्र बुनकर पहन लेना ही पर्याप्त नहीं है, वरन् कलात्मक रुचि को सुंदर ढंग से प्रदर्शित करना बुनाई है। इस कला के द्वारा अनेक ऊनी वस्त्र जैसे टोपा, मोजा, दस्ताने, कार्डिगन, जैकेट, फ्रॉक इत्यादि तैयार किये जाते हैं। यह कला बहुत ही सरल है। सिलाई, कढ़ाई के साथ-साथ बुनाई कला का ज्ञान होना परम आवश्यक है, जिससे आवश्यकता पड़ने पर हम घर पर कम खर्च में सुंदर ऊनी वस्त्र तैयार कर सकें। ऊनी वस्त्र तैयार करते समय, सर्वप्रथम ऊन खरीदते हैं।

अतः ऊन खरीदते समय, निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है-

- स्वेटर की मजबूती और बनावट ऊन के ऊपर ही निर्भर करती है, इसलिए ऊन हमेशा अच्छी किस्म का ही खरीदें।
- व्यक्ति की आयु तथा रंग के अनुसार, ऊन का चयन करना चाहिए।
- सदैव वजन में हल्का ऊन खरीदें, क्योंकि उसकी लम्बाई अधिक होती है।
- ऊन हमेशा पक्के रंग वाली, रोएँदार तथा अच्छी प्रकार से बटी हुई लेनी चाहिए।
- बड़ों के लिए हल्के रंग का ऊन लेना चाहिए।
- बच्चों के लिए मुलायम ऊन लेना चाहिए।

बच्चों के मोजे

आइए सीखें छोटे शिशुओं के लिए मोजा बनाना। आकार के अनुरुप फंदे कम या ज्यादा किए जा सकते हैं।

आवश्यक सामग्री-

75 ग्राम ऊन, 10 व 12 नम्बर की सलाई, 1 मीटर ऊन के रंग का रिबन, ऊन सिलने की सूई।

विधि

सबसे पहले 12 नम्बर की सलाई पर 33 फंदे डालिए। इसके बाद छः सलाइयाँ दोनों ओर से सीधी बुन लें। यह मोजे का बार्डर बन गया। अब इन फंदों को 10 नम्बर की सलाई पर चढ़ा लें। फिर एक सलाई सीधी, अगली सलाई उल्टी, बुनें इस क्रम से बुनते हुए 3 सेमी.

बुन लंे। 3 सेमी0 बुनने के बाद रिबन डालने की जाली बनाएं। उसके बाद सीधा एवं उल्टा क्रम से बुनते हुए आठ सलाई बुन लें। अब इन फंदों को तीन बराबर-बराबर भागों में बांट लें। बीच वाले ग्यारह (11) फंदों को दोनों तरफ से सीधे फंदे बुनते हुए 18 सलाई बुन लें। इसके बाद उन छोड़े हुए दोनों ओर के 11-11 फंदों को, इसके साथ जोड़ने के लिए, एक ओर से 16 फंदे, दूसरी ओर से 16 फंदे उठा लें। अब इन सभी फंदों को मिलाकर 14 सलाई दोनों ओर से सीधी बुन लें। एक और सलाई लेकर बीच से उन दोनों सलाइयों को जोड़ते हुए एक फंदा एक सलाई का तथा एक फंदा दूसरी सलाई का मिलाकर बुन लें और फंदे बंद कर दें। अब सूई में ऊनी धागा डालकर किनारे वाले भाग को सफाई से सिल दें। जहाँ जाली वाले फंदे हैं वहाँ रिबन डाल दें। इसी प्रकार दूसरा मोजा तैयार कर लंे।

छोटे बच्चों की ऊनी टोपी

शिशुओं तथा छोटे बच्चों को पैर, सिर तथा छाती की ठंड से बचाना अत्यंत आवश्यक होता है। आइए छोटे बच्चों को ठंड से बचाने के लिए टोपी बनाना सीखें।

आवश्यक सामग्री- 50 ग्राम ऊन, 10 व 12 नम्बर की सलाई, ऊन के रंग का आधा मीटर रिबन, ऊन सिलने की सूई।

विधि- 10 नम्बर की सलाई पर चार फंदे डालें। एक फंदा सीधा बुनें फिर एक जाली बनाएं। जाली बनाने के लिए ऊन आगे करके बुनने से एक फंदा बढ़ जाएगा और जाली बन जाएगी। प्रत्येक फंदे से जाली बनाएँ। उल्टी सलाई पूरी उल्टी बुनें। तीसरी सलाई में फंदे फिर जाली द्वारा बढ़ाएँ। अगली सलाई फिर उल्टी बुनें। ये क्रम इसी प्रकार दोहराते रहे जब तक कि टोपी की चैड़ाई पूरी नहीं हो जाती। चैड़ाई पूरी हो जाने पर माथे वाले हिस्से को बुनें। सिर वाले भाग पर साबूदाने की बुनाई डाल दें। उसके बाद बार्डर बुनकर

फंदे बंद कर दें। अब टोपी के दोनों किनारों को पकड़कर सिल दें। टोपी के किनारे पर एक लूप बनाकर रिबन का सुंदर सा फूल बनाकर टांक दें।

बुनाई के विभिन्न नमूने

ऊनी वस्त्रों में नमूना या डिजाइन डालकर, हम उसे सुंदर और आकर्षक बना सकते हैं। आइए हम ऊन से संुदर और सरल नमूना बनाना सीखें-

1.चने जैसी बुनाई: - एक सलाई पर 20 फंदे डालकर एक पूरी सलाई सीधा बुनिए। उल्टी ओर से पूरी सलाई उल्टी बुन लीजिए।

तीसरी सलाई - एक फंदा सीधा, फिर दो फंदे को एक साथ मिलाकर एक जोड़ा बनाते हुए एक फंदा बुनें। बाकी फंदे को भी जोड़ा-जोड़ा बनाकर बुनें, अंत में एक फंदा अकेला बचेगा, उसे

सीधा बुनें। सलाई पर गिनें। ग्यारह फंदे होंगे।

चैथी सलाई:- इस सलाई को भी सीधा बुनेंगे। पहला फंदा सीधा। फिर दोनों सलाइयों के बीच से ऊन के नीचे से सीधा बुनते हुए एक फंदा बुनें। फिर बायीं सलाई पर से एक फंदा सीधा बुनें। इसी प्रकार एक फंदा नीचे से फिर एक फंदा बाईं सलाई से बुनें। पूरी सलाई बुनने के बाद फंदे गिनें। 20 फंदे होने चाहिए।

पाँचवी सलाई - पूरी सलाई सीधी बुनें।

छठी सलाई - पूरी सलाई उल्टी बुनें।

सातवीं सलाई - तीसरी सलाई की भांति बुनें।

आठवीं सलाई - चैथी सलाई की तरह बुनें।

इस प्रकार बुनने से सुंदर चने जैसा नमूना पड़ेगा।

2.कनखजूरे की बुनाई या छड़ीदार बुनाई- सलाई पर 21 फंदे डालें। यह ध्यान रहे कि इस बुनाई में विषम (जैसे- 21, 31, 41, 51 आदि) फंदे हों।

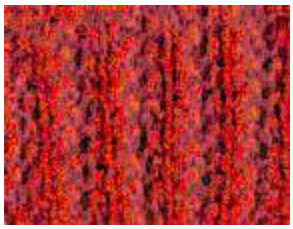

पहली सलाई - 2 फंदा सीधा, 2 फंदा उल्टा। इसी प्रकार पूरी सलाई बुनने पर अंत में एक फंदा बचेगा, जिसे सीधा बुनें।

दूसरी सलाई (उल्टी ओर से) - 2 फंदा सीधा, 2 फंदा उल्टा बुनें। अंतिम एक फंदा सीधा बुनें।प्रत्येक सलाई पर इसी प्रकार बुनना है। यह बुनाई बहुत सरल है और देखने में भी अच्छी लगती है।

3.चैकोर खानों वाली बुनाई -

20 फंदे सलाई पर डालें।

पहली सलाई - 2 फंदा उल्टा, 2 फंदा सीधा। इसी प्रकार पूरी सलाई बुनें।

दूसरी सलाई - पूरी सलाई उल्टी बुन लें।

तीसरी सलाई - पहली सलाई की तरह बुनना है।

चैथी सलाई - पूरी सलाई उल्टी बुन लें।

पाँचवी सलाई - 2 फंदा सीधा, 2 फंदा उल्टा बुनें।

छठी सलाई - पूरी सलाई उल्टी बुन लें।

सातवीं सलाई - पांचवी सलाई की तरह बुनें।

आठवीं सलाई - पूरी सलाई उल्टी बुनी जाएगी।

इसी प्रकार फिर पहली सलाई से आरम्भ करें। ध्यान रहे कि उल्टी ओर पूरा उल्टा बुना जाएगा।

4.जालीदार बुनाई -

20 फंदे सलाई पर डालें।

पहली सलाई - 3 फंदा सीधा, सलाई पर ऊन लपेट कर एक नया फंदा बनाएं, 3 फंदे का 1 फंदा बनाए। 1 नया फंदा सीधा बनाएं, एक फंदा सीधा, इसी प्रकार पूरी सलाई बुनें।

दूसरी सलाई - 5 फंदा उल्टा, 2 फंदा सीधा इस क्रम में पूरी सलाई बुनें।

तीसरी सलाई - सभी फंदा सीधा बुनें।

चैथी सलाई - पूरी सलाई उल्टी बुनें। पाँचवीं सलाई - पहली सलाई की तरह बुनें।

इसी प्रकार कई सलाई बुनने के बाद देखेंगे कि सुंदर सी जालीदार बुनाई तैयार हो गई।

ऊनी वस्त्र बुनते समय ध्यान रखने योग्य बातें

ऊनी वस्त्रों की बुनाई करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखने पर वस्त्र अच्छे ढंग से तैयार कर सकते हैं-

- बुनाई करते समय अपने हाथ साफ रखें।
- बार्डर के फंदे हमेशा दोहरी ऊन से डालें।
- बढ़ते बच्चों के स्वेटर, फ्रॉक इत्यादि में आवश्यकता से अधिक फंदे डालने चाहिए क्योंकि बच्चों के स्वेटर जल्दी छोटे हो जाते हैं।
- सलाइयाँ अच्छी क्वालिटी की होनी चाहिए।
- स्वेटर की सिलाई उचित प्रकार से की जानी चाहिए।

हमने जाना-

बुनाई करने से पूर्व निम्नांकित बातों को ध्यान में रखना चाहिए- 1. ऊन का चुनाव 2. सलाइयों का चुनाव 3. नमूने का चुनाव 4. फंदों की संख्या आकार के अनुसार 5. बुनाई में समानता 6. सिलाई करते समय सावधानी 7. प्रेस करना।

क्रोशिया

क्रोशिए द्वारा बुनकर सुंदर नमूने तैयार किये जाते हैं। यह एल्यूमीनियम प्लास्टिक, पीतल, स्टील की बनी एक सलाई होती है। इसके आगे का भाग हुक की तरह मुड़ा होता है। इसी से धागे को पकड़कर खींचते हैं।

क्रोशिया के प्रकार

क्रोशिया महीन तथा मोटी दोनों प्रकार की होती है। 3 से 7 नम्बर तक की क्रोशिया धागा बुनने के काम आती है। 8 से 14 नम्बर तक की क्रोशिया ऊन बुनने के काम मंे आती है।

क्रोशिए की बुनाई में रील के धागे से कुछ मोटे धागे का प्रयोग किया जाता है। इससे सुंदर बेलंे, टी0वी0कवर, मेजपोश तथा थालपोश बना सकते हैं।

क्रोशिया का उपयोग

बुनते समय क्रोशिया हमेशा दाहिने हाथ में पकड़ते हैं। बाएँ हाथ की तर्जनी उंगली (पहली उंगली) पर धागा लपेटते हैं। इससे सुंदर बेल बनाई जाती है जो फ्रॉक, पेटीकोट, मेजपोश, तकिया-कवर आदि में लगाई जाती है। इससे बच्चों की फ्रॉक, स्वेटर तथा मेजपोश आदि भी बनाए जाते हैं।

क्रोशिया से बुनने की विधि

चेन बनाना (जंजीरा) - पहले क्रोशिए से बुनाई करते समय चेन सीखना आवश्यक है। चेन बनाने के लिए धागा बाएं हाथ में तथा क्रोशिया दाएं हाथ में पकड़ते हैं। फिर हुक पर लूप बनाते हैं। धागे के लम्बे सिरे को पहली उंगली पर लपेटते हुए दूसरी उंगली के पास निकालते हैं। फिर छोटे सिरे को बीच की उंगली तथा अंगूठे से पकड़ते हैं।ं अब हुक को अपने सामने की ओर करके लूप बनाते हैं। फिर धागे को हुक के पीछे से निकालकर खींच

लेते हैं। बार-बार यह क्रिया करने से चेन बन जाती है। जितनी चेन बनानी हो उतनी ही बार यह क्रिया दोहराई जाती है। चेन आधार का कार्य करती है।

किनारे के साधारण नमूने

चादर, रूमाल, मेजपोश, शॉल, साड़ी के किनारे, इत्यादि में किनारे के नमूने बनाकर उन्हें सुंदर एवं आकर्षक बनाया जा सकता है।

नमूने तो मुख्यतः कई प्रकार के होते हैं जिससे वस्त्रों की सुंदरता बढ़ाई जा सकती हैं।यहाँ किनारे के नमूने बनाना बता रहे हैं।

सादा किनारा:- रूमाल के एक किनारे पर क्रोशिया से एक लूप बनाएंगे। फिर तीन चेन बनाकर थोड़ी दूर पर फिर रूमाल के किनारे से लूप निकालेंगे। यही क्रिया बार-बार करने से रूमाल का किनारा बन जाएगा किन्तु ध्यान रहे कि दूरी बराबर रहे ताकि सिकुड़न (झोल) न आने पाए।

अभ्यास

1. बहुविकल्पीय प्रश्न-

(1). रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) घर पर स्वयं ऊनी वस्त्र बुनने से ..... की बचत होती है।

(ख) क्रोशिया के ..... में धागा फँसाया जाता है।

(2). निम्नलिखित कथन सत्य है या असत्य है।

(क) बड़ों का ऊनी वस्त्र हमेशा चटक रंगों से बनाया जाता है। ( )

(ख) उत्तम किस्म के ऊन का ही प्रयोग करना चाहिए। ( )

2. अतिलघु उत्तरीय प्रश्न-

(क) बच्चों के लिए किस प्रकार का ऊन लेना चाहिए ?

(ख) किनारे के दो नमूनों का नाम लिखिए।

(ग) क्रोशिया कितने प्रकार की होती है ?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न-

(क) क्रोशिया का उपयोग लिखिए।

(ख) बुनाई के विभिन्न नमूने के नाम लिखिए।

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

(क) ऊनी वस्त्रों की बुनाई करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

(ख) चने जैसी बुनाई के नमूने की विधि लिखिए।

प्रोजेक्ट वर्क: -

- विभिन्न प्रकार की क्रोशिया से नमूने बनाकर एलबम तैयार कीजिए।
- अपने गुड्डे/गुड़िया के लिए टोपी एवं मोजा बनाइए।